इमामे सज्जाद (अ0) की ज़िन्दगी
का एक मजमुई ख़ाका

आयतुल्लाहिल उज़्मा सैय्यद अली ख़ामेना—ई मद्दाज़िल्लहुश्शरीफ

इमामे ज़ैनुल आबिदीन अलैहिस्सलाम ने 61 हिजरी में आशूरा के दिन इमामत की अज़ीम जिम्मेदारियाँ अपने कांधों पर सम्भालीं और 94 हिजरी में आपको ज़हर से शहीद कर दिया गया। इस पूरे अरसे में आप (अ0) इसी मक़सद को पूरा करने के लिए लगे रहे अब आप मज़कूरा नुक़्त—ए—निगाह की रौशनी में हज़रत की ज़िन्दगी के हिस्सों का जाएज़ा लीजिये कि आप इस ज़ेल में किन मरहलों से गुज़रते रहे, क्या तरीक़े अपनाए और फिर किस हद तक कामियाबियाँ हासिल हुईं।

वह तमाम इरशादात जो आपके ज़हने मुबारक से जारी हुए। वह काम जो आपने अन्जाम दिये वह दुआएँ जो लबे मुबारक तक आईं, वह मुनाजातें और राज़ व नियाज़ की बातें जो आज सहीफ—ए—कामिलः की शक्ल में मौजूद हैं उन सब की इमाम (अ0) के इसी बुनियादी मौक़िफ़ की रौशनी में तफसीर व ताबीर की जानी चाहिए चुनानचे इस पूरे दौरे इमामत में मुख़तलिफ मौक़ों पर हज़रत (अ0) के मौक़िफ़ और फैसलों को भी इसी उनवान से देखना चाहिए। मिसाल के तौर परः—

1— क़ैद के दौरान। कूफा में उबैदुल्लाह इब्ने ज़ियाद और शाम में यज़ीद पलीद के मुक़ाबले में आपका मौक़िफ़ जो बहादुरी व फ़िदाकारी से भरा हुआ था।

2— मसरफ बिन उक़बा के मुक़ाबले में। जिसको यज़ीद ने अपनी हुकूमत के तीसरे साल मदीन—ए—रसूल (स0) की तबाही और मुसलमानों के माल की बर्बादी पर लगाया था, इमाम (अ0) को मौक़िफ़ बहुत ही नर्म था।

3— अब्दुल मलिक बिन मरवान जिसको बनीउमैय्याा में बहुत ही ताक़तवर और सबसे चालाक ख़लीफा शुमार किया जाता था, उसके मुक़ाबले में इमाम का मौक़िफ़ कभी तो बहुत ही नर्म नज़र आता है।

इसी तरह—

4— उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के साथ आपका बर्ताव।

5— अपने साथियों और रफीक़ों के साथ आपका सुलूक और दोसताना नसीहतें और

6— ज़ालिम व जाबिर हुकूमत और उसके अमले से जुड़े हुए दरबारी उलमा के साथ इमाम (अ0) का रवैय्या।

इन तमाम मौक़िफ़ों और इक़दामात का बड़ी गहरी नज़र के साथ मुताला करने की ज़रूरत है। मैं तो इसी नतीजे पर पहुँचा हूँ कि अगर इस बुनियादी मौक़िफ़ को नज़र के सामने रखते हुए तमाम जुज़ियात व हवादिस का जाएज़ा लिया जाए तो बड़ी ही माने ख़ेज हक़ीक़तें सामने आएँगी। चुनानचे अगर इस ज़ाविये से इमाम(अ0) की पाक ज़िन्दगी का मुताला करें तो यह अज़ीम हस्ती एक ऐसा इन्सान नज़र आएगी जो इस ज़मीन पर ख़ुदावन्द वहदहू ला शरीक की हुकूमत क़ाएम करने और इस्लाम को उसकी असल शक्ल में नाफ़िज़ करने को ही अपना मुक़द्दस

मक़सद समझते हुए अपनी सारी की सारी कोशिश व मेहनत सबके सामने लाता रहा है और जिसने पुख़्ता तरीन और कारआमद तरीन काम को पहचान कर न सिर्फ यह कि इस्लामी क़ाफ़ले को उस गंदगी और परेशान हाली से निजात दिलायी है जो वाक़ेआ–ए–आशूरा के बाद दुनियाए इस्लाम पर मुसल्लत हो चुकी थी बल्कि देखने लायक़ हद तक इसको आगे भी बढ़ाया है। दो अहम और बुनियादी फ़रीज़े जो हमारे तमाम इमामों को सौंपे गए थे। उनको इमामे सज्जाद (अ0) ने बड़े अच्छे तरीक़े से अन्जाम दिया है। आप पूरी सियासी समझदारी और बहादुरी व शान का मुज़ाहेरा करते हुए निहायत ही एहतियात और गहरी नज़र से अपने फ़राएज़ अन्जाम देते रहे यहाँ तक कि तक़रीबन 35 साल की अन्थक कोशिश और खुदाई नुमाइन्दगी की अज़ीम ज़िम्मेदारियों को पूरा करने के बाद आप सरफराज़ व सरबुलन्द इस दुनिया से कूच कर गए और अपने बाद इमामत व विलायत का अज़ीम बोझ अपने बेटे व जानशीन इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) के हवाले फरमा गए।

चुनानचे इमाम मुहम्मद बाक़िर (अ0) को मन्सबे इमामत और हुकूमते इस्लामी की तश्कील की ज़िम्मेदारियों का सौंपा जाना रिवायात में बड़े ही खुले लफ़्ज़ों के साथ मौजूद है। एक रिवायत के मुताबिक़ इमामे ज़ैनुलआबेदीन (अ0) ने अपने बेटों को इकटठा किया और मुहम्मद बिन अली (अ0) यानी इमामे मुहम्मद बाक़िर (अ0) की तरफ इशारा करते हुए फरमायाः–

''यह सन्दूक़ और यह हथियार संभालो यह तुम्हारे हाथों में अमानत है।''

और जब सन्दूक़ खोला गया तो उसमें क़ुर्आन और किताब थी।

मेरे ख़याल में हथियार से, इंक़िलाबी क़यादत और रहबरी की तरफ इशारा, क़ुर्आन व किताब, इस्लामी इफकार व नज़रियात की अलामत है और यह चीज़ें इमाम ने अपने बाद आने वाले इमाम की हिफ़ाज़त में देकर निहायत ही इत्मिनान व सुकून के साथ आगाह व बेदार इन्सानों और खुदावन्दे आलम की नज़र में सरफ़राज़व सुरखुरू इस दुनिया को ख़ैरबाद कहा है।

यह जनाबे इमामे सज्जाद की पाक ज़िन्दगी का एक मजमुई ख़ाका है अब अगर हम तमाम ज़िन्दगी के हिस्सों का तफ़सीली जाएज़ लेना चाहें तो सूरते हाल को पहले से मुअय्यन कर लेना चाहिए।

हज़रत (अ0) की मुबारक ज़िन्दगी में एक छोटा से दौर वह भी है जिसको मनार–ए–ज़िन्दगी कहना ग़लत न होगा। मैं चाहता हूँ कि सबसे पहले इसी का ज़िक्र करूँ और फिर इमाम (अ0) की मामूल के तहत आदी ज़िन्दगी, उस ज़माने के हालात और माहोल और उनकी ज़रूरतों को बयान करूँगा।

असल में इमाम की ज़िन्दगी का वह मुख़्तसर और तारीख़ी दौर, कर्बला के वाक़ेए के बाद आपकी क़ैद का ज़माना है जो मुद्दत के एतेबार से छोटा लेकिन वाक़ेआत व हालात के एतेबार से बहुत ही हिला देने वाला और सबक़ लेने वाला है जहाँ क़ैद के बाद भी आप का मौक़िफ बहुत ही सख़्त और दूसरे के मुक़ाबले में बचाव करने वाला रहता है। बीमार और क़ैद होने के बावजूद किसी बड़े मर्दे मुजाहिद की तरह अपने क़ौल व फेल के ज़रिए बहादुरी व दिलेरी के बेहतरीन नमूने पेश किये हैं। इस दौरान इमाम का अन्दाज़ हज़रत की बक़िया ज़िन्दगी से, जैसा कि आप आगे देखेंगे, बिलकुल अलग नज़र आता है। इमाम (अ0) की ज़िन्दगी के असली दौर में

आपकी हिकमते अमली मज़बूत बुनियाद पर बड़े ही नपे–तुले अन्दाज़ में नर्मी के साथ अपने मक़सद की तरफ आगे बढ़ना है यहाँ तक कि किसी वक़्त अब्दुल मलिक बिन मरवान के साथ न सिर्फ एक महफिल में बैठे हुए नज़र आए हैं बल्कि उसके साथ आपका अन्दाज़ भी नर्म नज़र आता है, जबकि इस छोटी सी मुद्दत (क़ैद के ज़माने) में आपके एक़दामात बिलकुल किसी पुरजोश इंक़िलाबी की तरह नज़र आते हैं जिसके लिए कोई मामूली सी बात भी बर्दाश्त कर लेना मुमकिन नहीं है। लोगों के सामने बल्कि भरी भीड़ में भी घमण्डी और बड़ी शान वाले दुश्मन का मुहँतोड़ जवाब देने में किसी तरह की हिचकिचाहट नहीं करते।

कूफ़े का दरिन्दा सिफत खूँख़ार हाकिम, उबैदुल्लाह इब्ने ज़ियाद जिसकी तलवार से ख़ून टपक रहा है जो रसूल (स0) के बेटे इमामे हुसैन(अ0) और उनके मददगारों और साथियों का ख़ून बहा कर मस्त व घमण्डी और कामियाबी के नशे में बिलकुल चूर है उसके मुक़ाबले में हज़रत (अ0) ऐसा बेबाक और सख़्त अन्दाज़ एख़्तियार करते हैं कि इब्ने ज़ियाद आपके क़त्ल का हुक्म जारी कर देता है चुनानचे अगर जनाबे ज़ैनब (स0) ढाल की तरह आपके सामने आकर यह न कहें कि मैं अपने जीते जी ऐसा हरगिज़ न होने दूँगी और एक औरत के क़त्ल का मसला सामने न आता और यह कि क़ैदी के तौर पर दरबारे शाम में हाज़िर करना मक़सूद न होता तो अजब नहीं इब्ने ज़ियाद इमामे ज़ैनुलआबेदीन (अ0) के ख़ून से भी अपने हाथ रंगीन कर लेता।

बाज़ारे कूफा में आप अपनी फूफी जनाबे ज़ैनब (अ0) और अपनी बहन जनाबे सकीना (अ0) के साथ एक आवाज़ होकर तक़रीर करते हैं लोगों में जोश व जज़्बा पैदा करते हैं और हक़ीक़तों को सामने ले आते हैं।

इसी तरह शाम में चाहे वह यज़ीद का दरबार हो या मस्जिद में लोगों की बेपनाह भीड़, बड़े ही खुले अलफ़ाज़ में दुश्मन की साज़िशों से पर्दा उठाकर हक़ीक़तों को बहादुरी के साथ इज़हार करते रहते हैं चुनानचे हज़रत के उन तमाम ख़ुत्बों और तक़रीरों में अहलेबैत (अ0) की हक़्क़ानियत, ख़िलाफत के सिलसिले में उनका हक़ और मौजूदा हुकूमत के जुर्म और जुल्म व ज़ियादती का पर्दा चाक करते हुए निहायत ही कड़वे–कटीले अन्दाज़ में भूली हुई और अन्जान अवाम को झिंझोड़ने और जगाने की कोशिश की गई है।

यहाँ उन ख़ुत्बों को नक़ल करके इमाम (अ0) के जुमलों की गहराई पेश करने की गुंजाईश नज़र नहीं आती क्योंकि यह ख़ुद एक मुस्तक़िल काम है और अगर कोई शख़्स इन ख़ुत्बों की तशरीह व तफ़सीर करना चाहता है तो उसके लिए ज़रूरी है कि उन बुनियादी हक़ीक़तों को सामने रखते हुए एक–एक लफ़्ज़ की तहक़ीक़ और छान–फटक करे। यह है इमाम (अ0) की क़ैद व बन्द की ज़िन्दगी जो जुराअत व हिम्मत और बहादुरी व दिलावरी से भरी हुई नज़र आती है।

रिहाई के बाद!

ज़हनों में यह सवाल पैदा होता है कि आख़िर वह कौन सी वजहें थीं जिनके सामने इमाम (अ0) की मौक़िफ़ में ऐसी तबदीली पैदा हो गई कि अब क़ैद से छूटकर आप निहायत ही नर्मी का मुज़ाहेरा करने लगते हैं। तक़ैय्यः से काम लेते हैं। अपने तेज़ व तीखे इंक़िलाबी इक़दामात पर दुआ और नर्मी का पर्दा डाल देते हैं तमाम मामले बड़ी ख़ामोशी के साथ अन्जाम देते हैं जबकि क़ैद व बन्द के आलम में आपने ऐसे पक्के इरादों का इज़हार और जेहादी इक़दाम फरमाया है?

तो इसका जवाब यह है कि यह एक अलग दौर था यहाँ जनाब इमामे सज्जाद (अ0) को इमामत के फ़राएज़ की अदायगी और ख़ुदाई व इस्लामी हुकूमत को क़ाएम करने के लिए मौक़े जुटाने थे और साथ ही आशूरा को बहने वाले बेगुनाहों के ख़ून की तर्जुमानी भी करनी थी...... हक़ीक़त तो यह है कि यहाँ जनाब इमामे सज्जाद(अ0) के ज़हन में उनकी अपनी ज़बान न थी बल्कि तलवार से ख़ामोश कर दी जाने वाली हुसैन (अ0) ज़बान उस वक़्त कूफा व शाम की मंज़िलों से गुज़रने वाले इस इंक़िलाबी जवान के अन्दर उतार दी गई थी।

चुनानचे अगर इस मंजिल में इमामे ज़ैनुलआबेदीन (अ0) ख़ामोश रह जाते और इस जुराअत व हिम्मत और जवाँमर्दी व बेबाकी के साथ हक़ीक़तों को सामने लाकर दूध का दूध और पानी का पानी न कर दिये होते तो आगे आपके मक़सद के पूरा होने की तमाम राहें बन्द होकर रह जातीं क्योंकि यह इमामे हुसैन (अ0) का जोश मारता हुआ ख़ून ही था जिसने न सिर्फ आपके लिए मैदान तैयार कर दिया बल्कि तारीखे तशैय्युअ में जितनी भी इंक़िलाबी तहरीकें उठी हैं उन सब में ख़ूने हुसैन की गर्मी शामिल नज़र आती है चुनानचे इमामे ज़ैनुलआबेदीन (अ0) सबसे पहले लोगों को मौजूदा सूरते हाल से ख़बरदार कर देना ज़रूरी समझते हैं ताकि आगे अपने इसी अमल की रौशनी में बुनियादी व उसूली, गहरी व मज़बूत, लम्बी मुख़ालफतों का सिलसिला शुरु कर सकें और ज़ाहिर है कि तेज़ व सख़्त ज़बान इस्तेमाल किये बग़ैर लोगों को जगाना और होशियार करना मुमकिन न होता।

इस क़ैद व बन्द के सफर में जनाब इमामे सज्जाद (अ0) का किरदार जनाबे ज़ैनब (स0) के किरदार से बिलकुल मिला हुआ है दोनों का मक़सद हुसैनी इंक़िलाब और पैग़ामात की तबलीग़ व इशाअत है अगर लोग इस बात को जान जाएँ कि हुसैन (अ0) क़त्ल कर दिये गए, क्यों क़त्ल किये गए? और किस तरह क़त्ल किये गए? तो आगे, इस्लाम और अहलेबैत (अ0) की दावत एक नया रंग एख़्तियार करेगी लेकिन अगर अवाम इन हक़ीक़तों को नहीं जान पाए तो अन्दाज़ कुछ और होगा।

इसलिए समाज में इन हक़ीक़तों को आम कर देने और सही तौर पर हुसैनी इंक़िलाब को पहुँचाने के लिए अपनी तमाम दौलत सामने लाकर जहाँ तक मुमकिन हो सके इस काम को अन्जाम देना ज़रूरी था। चुनानचे जनाब इमामे सज्जाद(अ0) का वजूद भी जनाबे सकीना (अ0), जनाबे फातिम सुग़रा (अ0), खुद जनाबे ज़ैनब (स0) बल्कि एक–एक क़ैदी की तरह (अपनी–अपनी ख़ूबी के एतेबार से) अपने अन्दर एक पैग़ाम लिए हुए है। ज़रूरी था कि यह तमाम इंक़िलाबी ताक़तें एक होकर ग़रीबी व बेकसी में बहा दिये जाने वाले हुसैनी ख़ून की लाली कर्बला से लेकर मदीने तक तमाम बड़े–बड़े इस्लामी मरकज़ों में फैला दें।

जिस वक़्त इमामे सज्जाद (अ0) मदीने में वारिद हों लोगों की बेचैन व जासूस, सवाली निगाहों, चेहरों और ज़बानों के जवाब में आप उनके सामने हक़ीक़तें बयान करें। और यह इमाम की आइन्दा की तैयारी का पहला नक़्शा है. ....इसी लिये हमने इमामे ज़ैनुलआबेदीन (अ0) के इस मुख़्तसर ज़िन्दगी के हिस्से को एक अलग दौर कहा है।

इस मुहिम का दूसरा दौर उस वक़्त शुरु होता है जब आप रसूल (स0) के शहर में एक इज़्ज़तदार शहरी की हैसियत से अपनी ज़िन्दगी की शुरुआत करते हैं और अपना काम पैग़म्बरे इस्लाम के घर और आप (स0) के हरम (मस्जिदुन्नबी स0) से शुरु करते हैं। □□□